C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय: हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड-क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2×4=8) (1×2=2) [10]

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ

हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया।

हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नजर उस पर पड़ी, उसका ह्रदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, "बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?" बूढ़े ने उत्तर दिया, "मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।"

हरिहर समझता था कि दिन-दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाने का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया "बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।" हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था क्योंकि वह जानता था कि उसने अपना सारा धन दिन-दुखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई क्योंकि वह भी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जी उससे कह रहे थे, "हरिहर

तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।" इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना।

1. हरिहर कौन था तथा उसकी दिनचर्या क्या थी?

   उत्तर : हरिहर एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था यही उसकी दिनचर्या थी।

2. हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला?

   उत्तर : मार्ग में हरिहर को एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था।

3. हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता कैसे की?

   उत्तर : हरिहर बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया।

4. हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा?

उत्तर : बूढ़े की सहायता में हरिहर के सारे पैसे खर्च हो गए। अतः हरिहर ने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया।

उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे कि हरिहर ही उनका सच्चा भक्त है। हरिहर ने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं स्वयं श्रीकृष्ण ही थे। हरिहर की परीक्षा के लिए ही श्रीकृष्ण ने बूढ़े आदमी का वेश धारण किया था। श्रीकृष्ण ने यह भी कहा कि हरिहर ही उनका सच्चा सेवक है।

5. इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : इस गद्यांश से सच्ची भक्ति की शिक्षा मिलती है। सच्ची भक्ति तीर्थयात्रा करने, दान-पुण्य करने या जप-तप करने में नहीं होता है। सच्ची भक्ति तो निस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा और परोपकार में होता है।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'सच्ची भक्ति' 'सच्ची आराधना' आदि हो सकते हैं।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। (1x4=4)

(क) मोहन ने कार्ड छपवाए शादी के लिए। (मिश्र वाक्य)

उत्तर : मोहन ने कार्ड छपवाए वे शादी के लिए थे।

(ख) नीचे गिरने के कारण गिलास टूट गया। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर : गिलास नीचे गिरा और टूट गया।

(ग) बादल घिरे और अँधेरा छा गया। (रचना की दृष्टि से वाक्य का भेद बताइए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

(घ) गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए। (सरल वाक्य)

उत्तर : गली में शोर होने पर सब लोग बाहर आ गए।

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। (1x4=4)

(क) मैं पिछले साल <u>उसे</u> मुंबई में मिला था।

उत्तर : उसे - पुरुषवाचक सर्वनाम, (अन्य) पुल्लिंग, एवं स्त्रीलिंग दोनों में संभव, एकवचन कर्मकारक।

(ख) हम अपने <u>देश पर</u> मर मिटेंगे।

उत्तर : देश पर - संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

(ग) क्षमा <u>दसवीं</u> कक्षा में पढ़ती है।

उत्तर : दसवीं – विशेषण, संख्यावाचक, क्रमवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य।

(घ) <u>यह</u> पुस्तक अप्पू की है।

उत्तर : यह - सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पुस्तक' का विशेषण

प्र. 4. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। (1x4=4)

(क) मम्मी कुर्ता धोती है। (कर्मवाच्य)

उत्तर : मम्मी द्वारा कुर्ता धोया जाता है।

(ख) सोहन आँगन में सोता है। (भाववाच्य)

उत्तर : सोहन द्वारा आँगन में सोया जाता है।

(ग) कलाकार मूर्ति गढ़ता है। (कर्मवाच्य)

उत्तर : कलाकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है।

(घ) बच्चे से सोया नहीं जाता। (कर्तृवाच्य)

उत्तर : बच्चा नहीं सोया।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए। (1x4=4)

1. भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥

उत्तर : भयानक रस

2. "हा! वृद्धा के अतुल धन हा! वृद्धता के सहारे।
हा! प्राणों के परमप्रिय हा! एक मेरे दुलारे।
हा! शोभा के सप्त सम हा! रूप लावण्य हारे।
हा! बेटा हा! हृदय धन हा! नेत्र तारे हमारे।"
उत्तर : करुण रस

3. 'वात्सल्य रस' का स्थायी भाव क्या है?
उत्तर : वत्सलता

4. 'आश्चर्य' किस रस का स्थायी भाव है?
उत्तर : अद्भुत रस

खंड-ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र.6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (3×2=6)

किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगाबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दोटूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार

में 'भेंट' रूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते!

(क) बालगोबिन भगत किसकी कसौटी पर खरे उतरने वाले थे?

उत्तर : बालगोबिन भगत महापुरुष की कसौटी पर खरे उतरने वाले थे।

(ख) बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन क्या था?

उत्तर : बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन खेती था।

(ग) लोगों के कुतूहल का क्या कारण था?

उत्तर : बालगाबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दोटूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता।

प्र.7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर : चश्मेवाला कभी सेनानी नहीं रहा परंतु चश्मेवाला एक देशभक्त नागरिक था। उसके हृदय में देश के वीर जवानों के प्रति सम्मान था। वह अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था उसकी इसी भावना को देखकर लोग उसे कैप्टन कहते थे।

(ख) लेखक ने खीरे के मामले में अपना आत्मसम्मान निबाहना ही उचित क्यों समझा?

उत्तर : नमक-मिर्च छिड़क जाने से खीरे की पनियाती फाँकों को देखकर लेखक के मुँह में पानी आने लगा था परंतु वे पहली बार नवाब साहब के खीरे को खाने के आग्रह को ठुकरा चुके थे इसलिएनवाब साहब के दुबारा आग्रह पर अपने आत्मसम्मान को निबाहना ही उचित समझा और खीरा खाने से मना कर दिया।

(ग) एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

उत्तर : लेखिका की माँ अशिक्षित एवं घरेलू महिला थीं। लेखिका के माँ के साथ लेखिका के पिताजी का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे पूरी तरह से अपने पति के अधीन थीं तथा सदैव उनसे भयभीत रहती थीं। वे कभी पति से लड़ाई-झगड़ा नहीं करती थीं। यही नहीं वे अपने पति की अनुचित डाँट-फटकार का भी कभी प्रतिरोध नहीं करती थीं। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका कभी भी उचित नहीं समझती थी। अपने माँ के प्रति ऐसा व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी का ज़्यादती लगता था। उनकी सारी जिंदगी पति की डाँट-फटकार सुनते तथा अपने बच्चों की माँगों को पूरा करते गुजरी थी। इसप्रकार लेखिका के जीवन में उसके माँ का व्यक्तित्व का कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका। इसलिए लेखिका उन्हें व्यक्तित्वहीन कहती है।

उत्तर : कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी।

(ङ) फ़ादर बुल्के को आपके अनुसार जहरबाद से क्यों नहीं मरना चाहिए था?

उत्तर : फ़ादर बुल्के की मृत्यु जहरबाद अर्थात् गैंग्रीन से हुई। उनके शरीर में फोड़े का जहर फैल गया था। लेखक ने जब फ़ादर की मृत्यु का समाचार सुना तो बहुर अधिक उदास होकर सोचने लगे कि फ़ादर जैसे ममतामयी व्यक्तित्व को इस तरह से जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था। लेखक के अनुसार फ़ादर बुल्के ने आजीवन दूसरों के दुःख दूर करने का प्रयत्न किया सभी से वे सहानुभूति और करुणा रखते थे। ऐसे परोपकारी और करुणामय व्यक्ति की मौत कष्टकारी तो होनी ही नहीं चाहिए थी। लेखक जहरबाद को फ़ादर बुल्के के प्रति अन्याय समझते थे।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2 × 3 = 6)

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी

छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना। छाया मत छूना

(क) 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में छाया शब्द का प्रयोग सुखद अनुभूति के लिए किया है।

(ख) कवि ने छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर : कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। अपने वर्तमान के कठिन पलों को बीते हुए पलों की स्मृति के साथ जोड़ना हमारे लिए बहुत कष्टपूर्ण हो सकता है। वह मधुर स्मृति हमें कमज़ोर बनाकर हमारे दुख को और भी कष्टदायक बना देती है।

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसका तात्पर्य है- जब हम पुरानी यादों में जीते हैं तो हमारे सामने न केवल बीती हुई मीठी यादों के दृश्य सामने आ जाते हैं, बल्कि उन क्षणों की सुगंध भी तरोताज़ा हो उठती है।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

   उत्तर : परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

   (1) बचपन में तो हमने कितने ही धनुष तोड़ दिए परन्तु आपने कभी क्रोध नहीं किया इस धनुष से आपको विशेष लगाव क्यों हैं?

   (2) हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।

   (3) श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वतः टूट गया।

   (4) इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था। इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था?

2. कही पड़ी है उर में मंद-गंध पुष्प माल'- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति में फागुन ऋतू का मानवीयकरण किया गया है। नई हरी लाल पत्तियाँ को देखकर ऐसा महसूस होता है जैसे फागुन के गले में पेड़ की शाखाओं पर उपजे इन पुष्पों की सुंगंधित माला पड़ी हो।

3. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?

उत्तर : 'कन्यादान' कविता नारी जागृति से संबंधित है। इन पंक्तियों में लड़की की कोमलता तथा कमज़ोरी को स्पष्ट किया गया है। माँ स्वयं नारी होने के कारण समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं और कथित आदर्शो के बंधनों के दुख को झेल चुकी थी। उन्हीं अनुभवों के आधार पर वह अपनी बेटी को अपनी कमज़ोरी को प्रकट करने से सावधान करती है क्योंकि कमज़ोर लड़कियों का शोषण किया जाता है।

4. नदियों का पानी जादू का काम कैसे करता है? या फसल के लिए नदियों के योगदान को स्पष्ट करें।

उत्तर : कवि ने फसल को नदियों के जल का जादू इसलिए कहा है क्योंकि कोई फसल जब उपजती है जब उसमें नदियों के जल का योगदान होता है। मिट्टी के अंदर बोये गए बीजों पर नदियों का पानी जादुई असर करता है और इसी से बीज अंकुरित होते है। नदियों के जल से ही किसी भी फसल का पोषण होता है। जल से ही फसलों की सिंचाई होती है और फसल तैयार होती है। अत: जल के तत्वों को ग्रहण कर एक स्वस्थ फसल तैयार होती है।

5. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। जैसे संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने

सुरों को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है।

प्र.10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। [3×2=6]

1. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्यपरिणाम सामने आए है लिखें।

   उत्तर : आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। जलवायु पर भी इसका बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है जिसके कारण कहीं पर बारिश की अधिकता हो जाती है तो किसी स्थान पर सूखा पड़ जाता है। कहीं पर बारिश नाममात्र की होती है जिस कारण गर्मी में कमी नहीं होती। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है। ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य में कान सम्बन्धी रोग हो रहे हैं। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

2. भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर : भोलानाथ भी बच्चे की स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रूचि लेता है। उसे अपनी मित्र मंडली के साथ तरह-तरह की क्रीड़ा करना अच्छा लगता है। वे उसके हर खेल व हुदगड़ के साथी हैं। अपने मित्रों को मजा करते देख वह स्वयं को रोक नहीं पाता। इसलिए रोना भूलकर वह दुबारा अपनी मित्र मंडली में खेल का मजा उठाने लगता है। उसी मग्नावस्था में वह सिसकना भी भूल जाता है।

3. मूर्तिकार अपने सुझावों को अखबारों तक क्यों जाने नहीं देना चाहता था?

उत्तर : मूर्तिकार वास्तव में एक लालची व्यक्ति था। उसके मन में देश के सम्मान की भावना बिल्कुल भी नहीं थी। उसने मूर्ति पर नाक लगवाने के जो सुझाव दिए थे यदि वे जनता तक पहुँच जाते तो सरकारी तंत्र की फजीहत तो होती ही उलटे जनता भी उसके विरोध में खड़ी हो जाती इसलिए वह अपने सुझावों को अखबार में जाने से रोकना चाहता था।

खंड - घ

[लेखन]

प्र.11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

निरक्षरता एक अभिशाप

निरक्षरता मानव जीवन में एक अभिशाप है। निरक्षर नागरिक किसी भी देश के लिए अभिशाप होते हैं। अशिक्षित होना एक अभिशाप है, देश के मस्तक पर कलंक है।

निरक्षरता के कारण देशवासियों को घोर संकटों का सामना करना पड़ा है, चाहे वे सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो अथवा वैयक्तिक हो। शिक्षा के अभाव में न हम अपना व्यापार ही बढ़ा सके और न ही औद्योगिक क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति कर सके। जमींदारों, सूदखोरों ने निर्धन किसानों का शोषण उनकी निरक्षरता का लाभ उठाकर ही किया। पीढ़ियाँ बीत जाती थीं, किंतु कर्जे से मुक्ति नहीं मिलती थी विश्व में साक्षरता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 17 नवंबर, 1965 को आठ सितंबर का दिन विश्व साक्षरता दिवस के लिए निर्धारित किया था। 1966 में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था और तब से हर साल इसे मनाए जाने की परंपरा जारी है। साक्षरता दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य आम जनता को साक्षर होने के लाभों से अवगत कराना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत के लिए निरक्षरता को एक अभिशाप माना और आजादी के 70 साल के बाद भी हम इस अभिशाप से मुक्ति पाने में पूरी तरह से असफल रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ने-लिखने और हिसाब-किताब करने की योग्यता प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि हमें नवसाक्षरों में नैतिक मूल्यों के प्रति आदरभाव रखने की भावना पैदा करना होगी।

आज विश्व आगे बढ़ता जा रहा है और अगर भारत को भी प्रगति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलना है तो साक्षरता दर में वृद्धि करनी ही होगी। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक उत्थान के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में दुर्बल, निसहाय, अंधविश्वासी आदि दुर्भावनाओं से ग्रसित हो जाता है।

निरक्षरता के अभिशाप को दूर करने के लिए कोई उम्र या समय की सीमा नहीं होती इसलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में अक्षर ज्ञान प्राप्त कर नया उजाला लाना चाहिए। हम अपने देश का कल्याण करना चाहते हैं, तो प्रत्येक देशवासी का शिक्षित होना आवश्यक है।

फैशन बढ़ती प्रवृत्ति से नैतिक मूल्यों का ह्रास

नित नए-नए परिधानों से अपने को सँवारना और अपने आपको अति आकर्षक दिखाना ही फैशन है। फैशन के पीछे मूलभूत कारण आकर्षकता और प्रभावशीलता की होड़ है। फैशन किया ही इसलिए जाता है लोग उसे देखें और आश्चर्यचकित हों। वैसे तो प्रत्येक युग में फैशन का बोलबाला रहा है। पर आधुनिक युग में तो यह अपने चरम पर है। आज समय और परिस्थितियाँ इतनी परिवर्तित हुई हैं कि इस बदलाव का सीधा और साफ असर युवाओं पर नजर आ रहा है। अतिश्योक्ति नहीं होगी अगर यह कहा जाये कि न सिर्फ युवा बल्कि बच्चे भी इस फैशन से अछूते नहीं हैं। आज हम बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में फैशन के प्रति सजगता देख सकते हैं। जिस तीव्रता से फैशन के प्रति लोगों में आकर्षण बढ़ा है और हर बात को फैशन के नाम पर सहजता से लेने का प्रयास होता वह निश्चित रूप से शुभ संकेत तो कतई नहीं है। फैशन को बढ़ावा देने के अनेकों कारण हो सकते हैं। परंतु हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता के कुछ ज्यादा ही प्रभाव है। हम पश्चिम की देखा देखी में अपने वास्तविक परिधानों और वेशभूषा को भूलते जा रहे हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर एक देश की जलवायु, भौगोलिक परिस्थिति आदि पर उस देश का पहनावा निर्भर करता है। फैशन एक प्रकार का मीठा विष है जिसकी चपेट में हमारी युवा पीढ़ी अंधकार की गर्त में डूबी जा रही है। फैशन अवश्य करो परंतु उसके शिकार मत बनो। आज हमारी

खासकर युवा पीढ़ी फैशन की इस अंधी होड़ में अपने संस्कार, सभ्यता व संस्कृति को शने-शने भूलती जा रही। शालीनता और सादगी से उन्हें परहेज होता जा रहा है। अब तो हद यह हो गई है कि परिधानों से आप लड़का और लड़की में अंतर भी नहीं कर पाते। आज तो लड़के भी कान छिदवाने और लंबे बाल रखने लगे हैं। लड़कियाँ भी लड़कों के समान ही वेशभूषा धारण करने लगी है। भारतीय परिधानों को आउट डेटेट कहकर नकार देते हैं।

फैशन की इस प्रवृत्ती के कारण कई तरह के अपराध भी होते है और हमारे नैतिक मूल्यों का भी हास्र होता है। आज बड़े-बड़े व्यापारिक संस्थान लाभ कमाने हेतु विभिन्न प्रकार के फैशन से संबंधित विज्ञापन देते हैं। इसके प्रचार-प्रसार में पत्रिकाएँ, टेलीविजन आदि भी पीछे नहीं रहते। चैनलों पर प्रसारित होने वाले फैशन संबंधित कार्यक्रमों में आपत्तिजनक वेशभूषा में मॉडलों को रैंप पर कैटवाक करते हुए दिखाया जाता है। फिल्मों में कहानी से ज्यादा फैशन को प्रमुखता से दिखाया जाना है। एक तरफ जहाँ महिलाओं में धारावाहिकों के पात्रों के परिधान और डिजाइनर के कपड़े चर्चा का केन्द्र बनते तो दूसरी तरफ युवाओं के बीच हर उस नई आने वाली फिल्मों में इस्तेमाल किये गये फैशनेबल कपड़ें से लेकर जूते या फिर कोई नई तकनीक के इलेक्ट्रोनिक आइटम चर्चा का केन्द्र बनते। ये कुछ कारण है जिससे हमारी सामजिक और नैतिकमूल्यों का पतन होता है।

ये भी सर्वविदित सत्य है कि इस फैशन से छुटकारा पाना सरल नहीं है लेकिन यदि फैशन को मर्यादा में रहकर किया जाय तो यह बुरा भी नहीं है। अत: हमें चाहिए कि हम गलत और सही की पहचान कर ऐसे फैशन को अपनाए जिससे हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कार न छूटे। सभ्यता और संस्कृति के अनुसार बदलने वाले रंग-ढंग, सुंदर दिखने के लिए अपनाए गये नए शालीन तरीके ही फैशन हैं।

प्र.12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. आपके मोहल्ले में जल-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है जल-संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

सेवा में

मुख्य अधिकारी

जल संस्थान

दिल्ली।

दिनाँक : 5 फरवरी, 2015

विषय : जल - आपूर्ति नियमित करवाने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं रामकृष्ण नगर का निवासी हूँ। मेरी कॉलोनी में चार दिनों से पानी बहुत कम आ रहा है। जो थोड़ा-सा जल आता भी है, उसकी स्थिति यह है कि पीने लायक नहीं होता।

जल व्यवस्था एक आवश्यक सेवा है। आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीध्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा कॉलोनी में नियमित, पर्याप्त एवं शुद्ध जल की पूर्ति की व्यवस्था करवाओंगे। धन्यवाद

भवदीय

प्रफुल्ल कुमार

अथवा

2. माताजी की बीमारी की सूचना अपनी बहन को पत्र द्वारा दीजिए।

सीता भवन

दिल्ली।

दिनाँक : 5 फरवरी, 2015

प्रिय बहन

मधुर प्यार।

तुम्हारी कुशलता की कामना करते हुए यह पत्र लिखना आरंभ कर रही हूँ।

तुम्हें यह बताना था कि पिछले कुछ दिनों से माता जी की तबियत कुछ ठीक नहीं है। कल दूसरे डाक्टर को दिखाया, तो खून की कमी बताई। डाक्टर के कहे अनुसार इलाज़ शुरु कर दिया है।

तुम चिंता न करना। आशा है कि माता जी कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो जाएँगी।

तुम्हारी बड़ी बहन

मीरा व्यास

प्र.13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. घी के लिए विज्ञापन बनाइए।

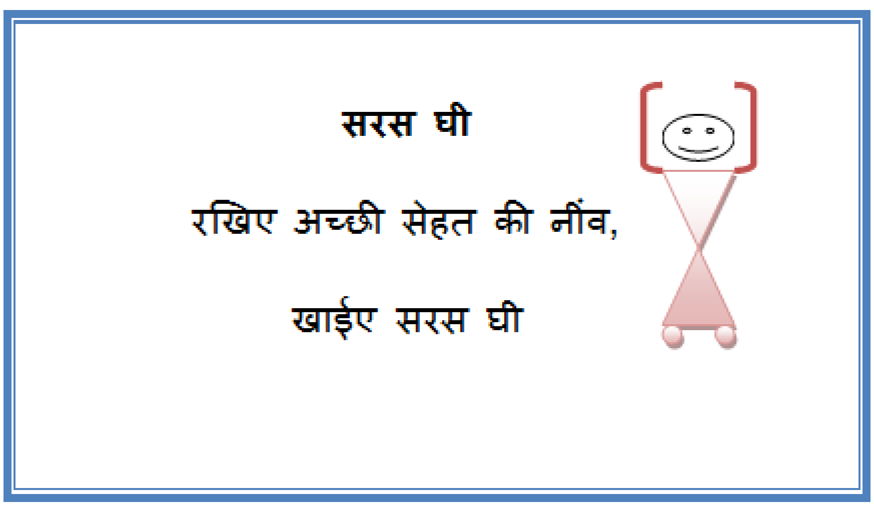

2. गर्मी में इस्तेमाल होनेवाले टेलकम पाउडर का विज्ञापन बनाइए।

गुलमहोर पाउडर

गर्मी की कर दे छुट्टी

गुलमहोर